आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2503 • उदयपुर, सोमवार 01 नवम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

आदिवासी क्षेत्र में वस्त्र वितरण सेवा

प्राणिमात्र की सेवा में जुटी मानव कमल कैलाश सेवा संस्थान एवं नारायण सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को गिर्वा पंचायत समिति के खेजड़ा ग्राम में निःशुल्क वस्त्र वितरण शिविर हुआ।

संस्थापक चेयरमैन कैलाश जी 'मानव' एवं कोषाध्यक्ष कमलादेवी जी अग्रवाल के सान्निध्य में 150 आदिवासी महिलाओं को राजस्थानी पोशाक घाघरा–ओढ़नी, 50 बच्चों को पेंट–शर्ट और 160 जरूरतमंदों को चद्दर बांटे गए। शिविर में साधना जी अग्रवाल, कुलदीप सिंह जी, शांतादेवी जी, सुकांत जी, शांतिलाल जी, राजेन्द्र जी वैष्णव ने आदि सेवाएं दी।

यह ज्ञातव्य है कि नारायण सेवा संस्थान की प्रेरणा से ही मानव कमल सेवा संस्थान ने अनेक सेवा कार्य आदिवासी क्षेत्र व जरूरतमंदों के लिये प्रारंभ किये हैं।

अंधेरे से उबरा संदीप

पुत्र के जन्म पर परिवार और सगे–संबंधियों में खुशी की लहर थी। लेकिन यह खुशी तब दुःख में तब्दील हो गई, जब पता चला कि बच्चा जन्म से ही पोलियो का शिकार है। इसके दोनों पांव कमजोर, टेढ़े और घुटनों के पास सटे हुए थे। आस–पास के अस्पतालों में भी दिखाया और उपचार भी हुआ लेकिन कोई लाभ न मिला। किसी बडे अस्पताल में जाना गरीबी के कारण संभव भी नहीं था। यह त्रासदायी दासता है बिहार के पश्चिमी चम्पारण जिले के गांव मगरोहा में रहने वाले पिता सुनील कुमार की। बालक संदीप जन्मजात दिव्यांगता के दुःख को लेकर उम्र के सोपान चढ़ता हुआ चौदह बरस को हो गया। माता–पिता ने गोदी में उठाकर उसे दूसरी कक्षा तक पढ़ाई कराई लेकिन बच्चे के आगे का भविष्य गरीबी और दिव्यांगता के कारण उन्हें अंधेरे में ही दिखाई देता था।

माता–पिता दिहाड़ी मजदूर हैं और बच्चे–बच्चियों सहित पांच सदस्यों के परिवार का पोषण करते है। एक दिन उन्हें किसी रिश्तेदार ने सलाह दी की वे बच्चे को लेकर राजस्थान ने सलाह दी की वे बच्चे को लेकर राजस्थान के उदयपुर शहर स्थित नारायण सेवा संस्थान में लेकर जाए, जहां इस तरह की बीमारी के निःशुल्क ऑपरेशन होते हैं। उसने इन्हें ये भी बताया कि वह खुद भी इस बीमारी का शिकार था। वहां जाने के बाद अब चलता हूं और अपने दैनन्दिन काम भी बिना सहारे आसानी से कर लेता हूं। सुनील बताते हैं कि वे बच्चे को लेकर 2018 में संस्थान में आए जहां डॉ. अंकित चौहान ने उनकी जांच कर बच्चे के पांव का पहला ऑपरेशन किया। इसके बाद 15 सितम्बर, 2021 के बीच कुल 4 ऑपरेशन हुए। संदीप अब पहले से ज्यादा खुश रहता है और चलता भी है। माता–पिता अपने सिर का बोझ हल्का करने के लिए संस्थान का बारम्बार आभार जताते हैं।

बोरीवली (महाराष्ट्र) में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है।

ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर नारायण सेवा संस्थान के बोरीवली (महाराष्ट्र) में संपन्न हुआ।

शिविर सहयोगकर्ता सहयोग सेवा ग्रुप, मुम्बई द्वारा राजस्थान भवन, जामली गली, बोरिवली (वेस्ट) में आयोजित शिविर में 82 दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग 33 तथा 49 के लिये कैलीपर्स की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री गोपाल जी शेट्टी (सांसद महोदय उत्तरीपूर्व, बोरीवली), अध्यक्षता श्री सुनिल जी राणे (विधायक महोदय बोरीवली), विशिष्ट अतिथि श्री प्रवीण जी शाह (नगर सेवक, बोरीवली), श्री योगेश जी लखानी (मैनेजिंग डायरेक्टर, ब्राईट ग्रुप), श्री यतीन जी मागिया, श्री संजय जी सेमलानी (सहयोग सेवा ग्रुप) कृपा करके पधारे। शिविर में श्री कमलचंद जी लोढ़ा (मुम्बई शाखा,संयोजक) शिविर में श्रीनाथुसिंहजी,श्री प्रकाश मेघवाल,(टेक्नीशियन), श्री हरिप्रसाद जी लड्डा (शिविर प्रभारी), श्रीमुकेश जी सेन, श्रीआंनद जी, श्री महेन्द्र जी जाटव मुम्बई आश्रम, श्री प्रवीण जी (विडियोग्राफर),श्री मुकेश त्रिपाठी रजिस्ट्रेन ने भी सेवायें दीं।

टीना थामेगी अब कलम

भोपाल(मध्यप्रदेश) के सूखी सेवनिया कस्बे को टीना(5) अब अन्य बच्चों की तरह अपने हाथ में भी पकड़ सकेगी कलम और लिखेगी अपने सुखद भविष्य की इबारत। इस बालिका के जन्म से ही दांए हाथ का पंजा (हथेली) विकसित नही हुई थी। सिर्फ कलाई पर नन्हीं–नन्हीं उंगलियां थी। माता–पिता अनीता व बबलू कुशवाह बच्ची की इस जन्मजात कमी से काफी दुःखी थे। जनवरी 2021 में भोपाल में संस्थान की ओर से . त्रिम अंग(हाथ–पैर) माप शिविर भोपाल उत्सव समिति के तत्वावधान में आयोजित हुआ। जिसमें माता–पिता टीना को लेकर गए जहां उसके लिए कोहनी तक . त्रिम हाथ बनाने का माप लिया गया। 6 माह बाद 25 जून 2021 को यह हाथ टीना को लगा दिया गया। हाथ लगाने के साथ ही संस्थान में उसकी माता को इस बात का प्रशिक्षण भी दिया गया कि हाथ का संचालन और रख–रखाव किस प्रकार होगा। टीना और माता–पिता अब बेहद खुश हैं। टीना कहती है कि अब वह खुशी–खुशी स्कूल जाएगी और खूब लिख–पढ़ कर जिंदगी के लम्बे सफर को सुखद बनाएगी।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

जब महापुरुष को कहा युवक बहुत जल्दी चल दिये। महापुरुष ने दोनों हाथों जोड़कर के कहा था। देवी ना मालूम कब संध्या हो जाये। ये जगना है ना मालूम कब संध्या हो जावे। जीवनकाल में जब तक प्राणों में प्राण है सांसो में सांस है जब तक देह मे तरंगे हैं, जब तक 80 किलोमीटर प्रति घंटे की स्पीड से चलने वाला रुधिर है।

जब तक ये करोड़ों कोशिकाएं हैं तब तक दान कर लें। प्रेम से बोल ले, सद्कर्म करलें, किसी के काम आ जावें। बहिना, भाणजी का मायरा अच्छी तरह से भरना चाहिए। आप कोई उपकार नहीं कर रहे हो। हाँ मायरा भरकर के अपना कर्त्तव्य पूरा कर रहे है।

जिस माता के गर्भ से आप पैदा हुऐ उसी गर्भ से आपकी बहिना पैदा हुई। उसकी बेटी और बेटा का शादी में मायरा भरकर के कोई एहसान नहीं है। प्रेम से कीजिए सारे काम राजी–राजी कीजिए। बार –बार सोचिये तेरा भाणा लागे। हे ठाकुर तू जो करवाता है मैं करता हूँ। 9–9 महिने इसी तरह से कितना बन्धन ? तूं तो माँ की करुणा थी, माँ की दया थी, माँ का प्रेम था, माँ का रुधिर था कि बन्धन के बावजूद तुम जिन्दा रह गये कितना दुःख था। गर्भ में भी दुःख और जन्में जब से भी दुःख। खेल खिलौना खेल रहा तूं देखा एक बहाना है। खेल–खेल में ये तो नरसी जी हुण्ड़ी खेल–खेल में रमा रहा तूं, गाड़ी आगे निकल गई।

धर्म पर चले तो नरसी हुण्ड़ी उनकी स्वीकार गई। हुण्ड़ी स्वीकारो म्यारा दीनानाथ हुण्ड़ी स्वीकर गई।

सम्पादकीय

सतयुग था तब शायद सभी सत्य संभाषण करते होंगे तभी इसका नामकरण सत के नाम से हुआ होगा। अन्य भी कारण होंगे पर यह भी एक पक्ष हो सकता है। आज हम अनचाहे ही झूठ बोल देते हैं। कई बार तो हम स्वभाववश ही झूठ कह देते हैं जबकि उस विषय में सच या झूठ से कोई विशेष अंतर भी नहीं पड़ रहा होता है।

अपनी दिनचर्या को हम ध्यान से देखें तो पायेंगे कि कई बातें ऐसी थीं जिन्हें छिपाने की या उसके अन्य रूप में कहने की आवश्यकता ही न थी, पर हम स्वभाव वश वैसा कर जाते हैं। कहीं जाने से बचना हो, किसी का सहयोग करने की मंशा न हो, किसी बात पर अपनी राय न देनी हो तो हम किसी न किसी झूठ को गढ़ लेते हैं। यह ठीक है कि इस झूठ के सहारे हम दुनियादारी तो निभा लेते हैं, किसी को पता भी नहीं चल पाता कि हमने बहाना किया या झूठ बोला है, पर हमारा स्वभाव तो बिगड़ ही रहा होता है। जब थोड़ा झूठ बोलने या बहाना बनाने से काम चलने लगता है तो मन फिर इसका आदी हो जाता है। हम गाहे–बगाहे, जाने–अनजाने, चाहे– अनचाहे, जरूरत –गैर जरूरत वैसा ही करने लगते हैं। यह हमारे स्वभाव की कमजोरी हो जाती है। इससे बचने के लिये संकल्पपूर्वक सत्य संभाषण का मन बनाना होगा, तभी इससे बच सकेंगे।

कुछ काव्यमय

सत्य बोलना है सरल,
यदि बन जाय स्वभाव।
ज्यों सरिता के नीर का,
होता सहज बहाव।।
झूठ बोलने में कई,
करने पड़े प्रयास।
शंकित मन प्रतिफल रहे,
रूकते नहीं कयास।।
सत्य झूठ को तोलना,
हिया तराजू लेय।
सत्य शीत कर देत है,
झूठ करे आग्नेय।।
सत्य सदा होता सफल,
नहीं झूठ के पाँव।
उलटे पड़ते हैं सदा,
चलो झूठ के दाँव।।
संभाषण तो सत्य है,
झूठ करे बकवास।
जग उसको ही मानता,
जो सत का है दास।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

सच्ची सेवा

सेवा ही मानव का धर्म है। परोपकार व्यक्ति ईश्वर के समान होता है। सेवा व्यक्ति की आनन्दानुभूति के साथ–साथ धर्म के मार्ग का भी प्रशस्तिकरण है। सेवा का द्वार सीधा धर्म के भवन में ही खुलता है। उसी मानव का जीवन सफल कहा जा सकता है, जिसने अपना जीवन सेवा में बिताया हो।

एक सज्जन पुरुष ने एक ऐसे विद्यालय की स्थापना के बारे में सोचा, जिसमें वे बच्चों के मन में मानवीय मूल्यों की स्थापना कर सकें। कुछ समय पश्चात् उन्होंने एक विद्यालय खोला, जिसमें वे बालकों को नैतिक शिक्षा, जीवन दर्शन आदि का ज्ञान बच्चों को देने लगे। एक दिन उन्होंने 'सच्ची सेवा भावना' विषय पर विद्यार्थियों के बीच वाद–विवाद प्रतियोगिता करवाने की सोची। तय दिन एक बड़े से हॉल में वह

वाद–विवाद प्रतियोगिता शुरू हुई। समस्त प्रतिभागियों ने बढ़–चढ़कर पक्ष–विपक्ष में तर्क प्रस्तुत किए। जब पुरस्कार वितरण का समय आया, तब उन सज्जन पुरुष ने इतने सारे प्रतिभागियों में से किसी को भी पुरस्कार नहीं दिया, अपितु उन्होंने पुरस्कार एक ऐसे बालक को दिया, जो उस प्रतियोगिता का हिस्सा ही नहीं था। इस पर उपस्थित अन्य सभी प्रतिभागी नाराज हो गए और उन्होंने सज्जन पुरुष से पूछा–आपने ऐसा क्यों किया? वे सज्जन पुरुष बोले –जब तुम सब इस हॉल में प्रवेश कर रहे थे, उससे पहले मैंने दरवाजे पर एक बिल्ली रखवाई थी, जिसके पाँव में चोट लगी थी। आप सभी तो बिल्ली को देखते हुए अन्दर आ गए, परन्तु किसी ने भी उस बिल्ली के पाँव पर मरहम–पट्टी करने के बारे में नहीं सोचा।

जबकि इस लड़के ने उस बिल्ली के पाँव पर मरहम–पट्टी की, सेवा की और सारे समय उस बिल्ली के पास बैठा रहा।

वास्तव में, सेवा भावना वाद–विवाद का विषय नहीं है, बल्कि यह कर्म में उतारने का विषय है। सेवा भावना एक ज्ञान है, परंतु यह तब तक साबित नहीं होती, जब तक इसे करके ना दिखाया जाए। सेवा भावना के बारे में सिर्फ बोलने से कुछ नहीं होता।

–कैलाश 'मानव'

सेवा की शक्ति

छोटा चन्द्रमा बड़े सूर्य को भी ग्रहण लगा देता है। अगर हम सही जगह पर, सही समय पर, सही काम करें, तो हम भी बड़े–बड़े काम कर सकते हैं।

एक बार संत राबिया काबा के दर्शन के लिए जा रही थीं। संत राबिया एक सूफी संत थीं। उन्होंने गरीबों और दुःखियों की सेवा को ही पैगम्बर सेवा समझा था। वह किसी भी मंदिर–मस्जिद में नहीं जाती थीं, लेकिन परिवार के कहने से काबा जाने के लिए राजी हुईं।

काबा जाते हुए जब रास्ते में वे एक जंगल से गुजरीं, तो उन्हें एक सूखे हुए पेड़ के खोल में, एक कुत्ता फंसा हुआ दिखा। राबिया को दया आ गई और उन्होंने उसे पेड़ से निकालकर अपनी गोद में उठा लिया। उन्होंने देखा कि कुत्ता प्यासा है। इधर–उधर पानी ढूंढने की कोशिश की तो कुछ दूरी पर एक कुआँ नजर आया। कुएँ के पास जाने पर पता चला कि वहाँ पर बाल्टी तो थी पर रस्सी नहीं थी। उनकी नजर अपने कपड़ों पर जाती है। उन्होंने बिना वक्त गंवाए अपने कपड़ों को फाड़कर रस्सी बनाई और बाल्टी को उससे बांधकर कुएँ में भरने के लिए डाला, परन्तु रस्सी पानी से थोड़ी दूर रह गई, उनको बहुत दुःख हुआ। संत राबिया दुःखी मन से तरकीब ढूंढ़ने लगीं। तभी उनका ध्यान अपने केशों पर गया, जो बहुत लंबे थे।

उनके मन में जीव सेवा की भावना इतनी प्रबल थी कि उन्होंने दर्द की परवाह किए बिना तुरंत अपने केशों को जड़ से उखाड़ लिया और रस्सी से जोड़ दिया। लम्बे केशों के रस्सी के साथ जुड़ते ही रस्सी लंबी हो गई और बाल्टी पानी तक पहुँच गई। संत राबिया ने 5–6 बार पानी निकाल कर उस मरणासन्न कुत्ते को पिलाया, जिससे वो तृप्त हो गया और उसकी जान बच गई। तृप्त होते ही कुत्ता अन्तर्ध्यान हो गया।

संत राबिया सिर के बाल उखड़ जाने के कारण लहुलुहान हो गई थीं और अब उन्हें पीड़ा भी महसूस हो रही थीं वह बार–बार मिन्नतें कर रहीं थीं – हे काबा शरीफ ! मैं आपके पास कैसे आऊँ ? अपनी नेक बंदी की पुकार अल्ला–ताला ने सुन ली, अचानक बियाबान जंगल रौशनी से जगमगा उठा। काबा शरीफ के पार्षद उस रौशनी में प्रकट हुए और बोले कि संत राबिया आपको काबा आने की जरूरत नहीं, खुदा खुद चलकर आपसे मिलने आ गए हैं।

इससे सिद्ध होता है कि भक्त के पास भगवान स्वयं चले आते हैं। औरों की मदद करो .....खुदा आपकी मदद करेगा।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

डी.आर.डी.ए. की तरफ से प्रशिक्षुओं को हर माह भत्ता दिया जाता था। भत्ता देने अधिकारी स्वयं केन्द्र पर उपस्थित होते थे तथा प्रशिक्षुओं के प्रशिक्षण की पुष्टि करते थे। अधिकारी प्रशिक्षुओं से इतने प्रसन्न हो जाते कि सरकारी भत्ते के अतिरिक्त अपनी जेब से 300–400 रु. अलग से दे जाते। कैलाश अधिकारियों की ऐसी उदारता देख प्रसन्न हो जाता। यह कार्य एक बार तक ही सीमित नहीं रहा, जब बारम्बार अधिकारियों की ऐसी सहृदयता उसने देखी तो वह सोचने पर मजबूर हो गया कि कहने वाले कुछ भी कहते रहें, सोचते रहें मगर सच यह है कि दुनिया अच्छे लोगों से भरी है। सेवा के पथ पर उसके बढ़ते कदम और उत्तरोत्तर प्रगति इसका जीता जागता उदाहरण थी। डी.आर.डी.ओ. से आने वाले लोगों में अर्जुन सोनी भी थे, वे जब भी आते प्रशिक्षु महिलाओं को कुछ न कुछ देकर ही जाते। सुथारी का, सिलाई का प्रशिक्षण चलता रहा, उधर सेवा धाम पर निर्माण कार्य भी शुरू हो गया। शिविर यथावत जारी थे। इन सब कार्यों के लिये निरन्तर धर की आवश्यकता पड़ती रहती थी, उसे जुटाना भी एक कार्य ही था। इस हेतु किसी ने सलाह दी कि क्यूं नहीं हम 500–500 रु. लेकर संस्था के आजीवन सदस्य बनाना शुरू करें। इसमें कोई अड़चन नहीं थी तो सदस्य बनाना भी शुरू कर दिया।

विभिन्न गांवों में शिविर लगाने के दौरान एक बार तरपाल गांव में भी शिविर लगाया। इस गांव के कई सेठ–साहूकार सूरत में व्यवसाय करते थे। उन्हीं दिनों एक व्यवसायी सूरत से तरपाल आया हुआ था। वह कैलाश के कार्यों से बहुत प्रभावित हुआ। उसने कहा कि अगर आप सूरत आओ तो आपको अच्छा सहयोग मिल सकता है। कैलाश ने भी सूरत के बारे में बहुत सुन रखा था। उसे यह बात जंच गई और सूरत जाने का कार्यक्रम बना लिया।

कैलाश एक सहयोगी को साथ लेकर सूरत के लिये निकला, बस स्टेण्ड पर पहुँचा तो टिकट नहीं मिले। वापस घर लौटने के बजाय सड़क पर खड़े हो गये और हाथ देकर ट्रकें रोकने लगे। मुम्बई जाने वाली एक ट्रक ने दोनों को बिठा लिया। सुबह होते होते सुरत पहुँच गये। सूरत का टेक्सटाईल मार्केट पूरा मेवाड़ के लोगों से भरा पड़ा है, उसमें भी खास कर के गोगुन्दा क्षेत्र के लोगों की भरमार है।

कैलाश सीधा इसी मार्केट में पहुँचा। यहां जिसका पता दिया गया था उस दुकान पर पहुँचा। दुकान पर मुनीम ने उनका स्वागत किया। वह भी गोगुन्दा क्षेत्र से ही था। कैलाश ने सेठजी से मिलने की इच्छा व्यक्त की तो पता चला कि वो तो बाहर गये है। कैलाश निराश हो गया। मुनीम को भी कैलाश का मुँह देख कर दया आ गई, उसने जल पिलाया और आने का मकसद पूछा। कैलाश ने उसे नारायण सेवा तथा अपने कार्यों के बारे में बताया और फोटो एलबम भी दिखाई। मुनीम इन्हें देख बहुत प्रभावित हुआ और अपनी जेब से 50 रु. निकाल कर कैलाश को देते हुए कहा, यह मेरी तरफ से लिख लो।

अंश - 149

तनाव से कैसे बचें ?

कोरोना के बाद से दुनियाभर में मानसिक रोगियों की संख्या बढ़ी है। आकड़ों की बात करें तो केवल कोरोना पीड़ितों में ही एक तिहाई अवसाद से पीड़ित हैं। भारत में मानसिक रोगियों की संख्या 8–9 करोड़ से अधिक है। इनमें से भी 20 प्रतिशत ऐसे हैं जिनको तत्काल इलाज की जरूरत है। अभी जरूरत है इसको समझने की ताकि समय रहते बचाव किया जा सके।

इन बीमारियों की आशंका

अवसाद(डिप्रेशन), तनाव, पार्किंसन, फोबिया, भूलने की बीमारी, सिजोफ्रेनिया, डिमेंशिया, एडिक्शन, ऑटिज्म, ईटिंग डिऑर्डर, बाईपोलर डिऑर्डर, एंजाइटी आदि मानसिक रोग व समस्याएं है। कोरोना संक्रमित रह चुके एक तिहाई लोगों में डिप्रेशन की स्थिति भी देखने को मिल रही है।

- 7.5 प्रतिशत लोग अपने देश में किसी न किसी मानसिक समस्या से ग्रसित है।
- 6 करोड़ से अधिक लोग अवसाद से ग्रसित है देश में। इनमें से 20 प्रतिशत गंभीर रोगी है।

इस तरह पाएं निजात

आम मानसिक समस्याओं से दिनचर्या में सुधार कर निजात पा सकते हैं। जीवनशैली को बेहतर बनाएं, लोगों से जुड़े, बातें करें, सकारात्मक रहें, मोबाइल स्क्रीन या सोशल मीडिया की लत से बचें, रूचिकर अभ्यास करें। शारीरिक व्यायाम व योगाभ्यास, सुदर्शन क्रिया, मेडिटेशन आदि करें।

सकारात्मक रहने का है लाभ

सकारात्मक रहे। यह मानसिक समस्याओं को दूर भगाने में सहायक है। जीवनशैली को बेहतर बनाने और अच्छा–बुरा समझने का काम आप में बेहतर तरीके से कर सकते हैं। समय रहते खुद में बदलाव कर लेना और भावनाओं को काबू में रखना, इनसे बचाव के कुछ आसान उपाय है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

हाँ बदलाव ही बदलाव। भाई साहब का टेलीफोन आया– अरे! कैलाश, बाबा का जन्म दिवस है 23 नवम्बर को

प्रशान्ती निलियम चलना है। हाँ, दक्षिण भारत में कर्नाटक में, चलेगा क्या? हाँ चलूंगा– चलूंगा। छूट्टी की एप्लीकेशन दी। 17 तारीख से छूट्टी मिल गयी। 17से 28 तारीख तक की, कैलाश तूं बॉम्बे पहुँच। हम कोटा से बॉम्बे आते हैं। राजेश, राधेश्याम भाई साहब, पुष्पादेवी जी प्रशान्ती विद्या मन्दिर के पच्चीस बच्चे। इधर मैं, प्रशान्त, कल्पना, कमलाजी। दादर सेन्ट्रल, फिर दादर,फिर बाम्बे दादर। रेल्वे में जान–पहचान थी। उन्होंने कहा कि– गाड़ी पाँच– सात मिनट रूकती है। उस भ्रम में रहे कि गाड़ी रूकती है।

तीन मिनट ही बाम्बे सेन्ट्रल में गाड़ी रूकती थी। दादर हो के, बोरीवली होकर के या दूसरे रास्ते सेहोकर दक्षिण भरत में बोरीवली भी आती थी। दादर से दूसरे रास्ते में, कल्याण के रास्ते से दक्षिण भारत में प्रवेश कर जाती थी, पूना होकर के।

अब गाड़ी में सामान रखे जितने तो, चढ़े जितने तो गाड़ी ने हॉर्न बजा दिया, गाड़ी ने सीटी दे दी। जल्दी–जल्दी चढ़े, चढ़ तो सब गये।अरे! प्रशान्त कहाँ रह गया? प्रशान्त कहाँ रह गया देखना तो? देख तो सामान के नीचे दबा हुआ था। पापा– पापा में दब गया। जल्दी निकालो रे भाई। सामान डाला। गाड़ी तो चल दी।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 275 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023